विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 12-04-2021

वर्ग पंचम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

व्यंजन (हल्)- व्यञ्जन उन्हें कहते हैं जिनका उच्चारण बिना स्वर की सहायता के नहीं होता। व्यञ्जन का उच्चारण काल अर्द्धमात्रा काल है। जिस व्यञ्जन में स्वर का योग नहीं होता, उसमें हलन्त का चिह्न (,) लगाते हैं।

जैसे- क् ख् ग् घ् आदि। संस्कृत में इनकी संख्या 33 है।

व्याकरण वर्ण-विचार 1

(‘) अनुस्वार (*) अनुनासिक (☺ विसर्ग। व्याकरण में व्यञ्जन का अभिप्राय स्वर रहित वर्ण से ही होता है।।

व्यञ्जन के साथ स्वरों का संयोजन व्याकरण वर्ण-विचार

नोट- इसी प्रकार सभी व्यंजन वर्गों में सभी स्वरों का संयोग (जोड़) होता है।

संयुक्त वर्ण- दो व्यञ्जन मिलकर संयुक्त वर्ण बनाते हैं

RBSE Class 6 Sanskrit व्याकरण वर्ण-विचार 3

हलन्त- जिस शब्द के अंत में हलु हो, उसे हलन्त कहते हैं, यथा- देवम् शब्द हलन्त है। इसका चिह्न () तिरछी रेखा के रूप में वर्ण के नीचे लगाया जाता है। शुद्ध अथवा हल् व्यञ्जनों के नीचे ही हलन्त लगाया जाता है, जैसे- ख् प् ग्। इसके उच्चारण में बहुत कम समय लगता है तथा वर्गों में स्वर मिलने के बाद इसका लोप हो जाता है।

यथा- ख् या छु + अ = ख

RBSE Class 6 Sanskrit व्याकरण वर्ण-विचार 4

वर्ण विन्यास- शब्द जिन अक्षरों से बना हों उन सबको अलग-अलग कर देना ही वर्ण-विन्यास अथवा

वर्ण-विच्छेद कहलाता है, -